iokl h iofRr dk lekt”kkL=h; v/;;u

t ;”kdj iIkn ik.M;*] itk frokjh**
*एसो0 प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग,
**यू0जी0सी0 नेट, जे0आर0एफ0, डी0ए0वी0 कालेज, कानपुर नगर।

lkjk”k

भारत विविधताओं का देश है यहां विभिन्न क्षेत्रों की भौतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक दशाओं में पर्याप्त विभिन्नता एवं विविधता दृष्टिगोचर होती है। प्रवासी भारतीयों के बारे में जानने के लिये यह जानना जरूरी है कि प्रवास क्या है?

जो लोग अपने जन्म स्थान को छोड़कर अन्यत्र बस जाते है उन्हें प्रवासी कहते है। प्रवास अनेक कारणों से होता है लेकिन मुख्य रूप से अजीविका के बेहतर साधनों की तलाश में होता है। प्रवास प्रत्यक्ष रूप से केवल जनसंख्या की भौतिक संरचना तथा स्वास्थ्य को ही नहीं प्रभावित करता है, बल्कि सामाजिक संरचना, समाज की प्रक्रिया तथा व्यक्तियों के व्यक्तित्व को भी अत्यधिक प्रभावित करता है। (Vh0, y0fLeFk½ ऐतिहासिक रूप से भारत में प्रवास का प्रथम उल्लेख हमें सम्राट अशोक के अभिलेखों से मिलता है। सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार के लिये ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में श्रीलंका, यूनान, अफगानिस्तान, जावा सुमात्रा, आदि देशों में अपने दूत भेजे थे, इसके पश्चात 11वीं सदी में दक्षिण भारत के प्रतापी चोल सम्राटों में जावा–सुमात्रा, कम्बोडिया आदि सुदूर पूर्व देशों की विजय यात्रा की जिसके फलस्वरूप इन देशों में भारतीयों का प्रयास हुआ। इस शोध पत्र से भारत में प्रवास की प्रवृत्ति का अध्ययन करेंगे।

lar “kCn–*सामाजिक संरचना, संचार–प्रौद्योगिकी, पलायन, प्रवासी भारतीय दिवस, व्यवसायिक वातावरण, विस्थापन, गृहस्थी सहित प्रवास, जन्म स्थान को प्रवास, सामाजिक गुण।*

शोधपत्र का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:

t ;”kdj iIkn ik.M;*] itk frokjh, "*प्रवासी प्रवृत्ति का समाजशास्त्रीय अध्ययन*", RJPP 2017, Vol. 15, No.2, pp. 174-179

http://anubooks.com/?page_id=2004

ifjp;kRed fo'y"k.k–

प्रवास जीवन की सभी प्रजातियों में संघर्ष की प्रक्रिया में पक्षियों व मानव के अस्तित्व के लिये आवश्यक है। मानव इतिहास में प्रवास सबसे महत्वपूर्ण पहलू है।

प्रवास में मानव अपना घर परिवर्तित करता है न कि मकान। यह आवश्यक नही है कि प्रवास केवल आर्थिक लाभ के लिये हो बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक राजनैतिक और पर्यावरणीय कारको की भी अहम् भूमिका होती है। बहुत से लोग पारिवारिक झगड़ों व निर्धनता, बेरोजगारी, कर्मभूमि, कर्ज व प्राकृतिक आपदाओं, विवाह एवं सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनैतिक आदि हिंसात्मक कारणों के कारण उस स्थान को छोड़कर अन्य स्थान पर निवास करने लगते है।

ऐतिहासिक व अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में देखा जाये तो स्पष्ट है कि प्रवास कोई आज से नही बल्कि राजा महाराजाओं के युगों से हो रहा था जिसका प्रथम उल्लेख हमे सम्राट अशोक के अभिलेखों से मिलता है।

यह एक मान्य तथ्य है कि औपनिवेशिक काल के दौरान अंग्रेजों द्वारा उत्तर प्रदेश और बिहार से मॉरीशस, कैरेबियन द्वीपों किंजी और दक्षिण अफ्रीकाः– फ्रांसीसियों और जर्मनी द्वारा रियूनियन द्वीप और सूरीनाम में :– डच और पुर्तगलियों द्वारा गोवा, दामन द्वीप में अंगोला मोजाम्बिक व अन्य देशों में कृषि कार्य हेतु करारबद्ध रूप से लाखों भारतीयों को ले जाया गया जिन्हें लोक भाषा में गिरमिटिया मजदूर कहा गया।

आधुनिक समय में प्रवासियों की दूसरी तरंग व्यवसायियों व शिल्पियों, व्यापारियों और फैक्ट्री मजदूरों के रूप में आर्थिक अवसरों की तलाश में निकटवर्ती देशों जैसे–थाईलैण्ड, सिंगापुर, मलेशिया, इण्डोनेशिया, ब्रूनेई इत्यादि देशों में व्यवसाय के लिये यह प्रवष्त्ति अभी भी जारी है।

प्रवास का नया युग वर्ष 1960 के बाद प्रारम्भ होता है जो मुख्य रूप से ज्ञान आधारित प्रवास प्रवष्त्ति है। इसके अन्तर्गत सॉफ्टवेयर इन्जीनियर, डॉक्टर, प्रबन्धन परामर्शदाता, वित्तीय विशेषज्ञ तथा वर्ष 1980 के पश्चात से संचार प्रौद्योगिकी विशेषज्ञ शामिल है।

इन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, कनाडा, जर्मनी, न्यूजीलैण्ड, आस्ट्रेलिया इत्यादि देशों में प्रवास किया।

i:okl d: i:dkj–

1&vUrjegk}hih;] i:okl–एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप में जाकर निवास करने की प्रक्रिया को अन्तरमहाद्वीपीय प्रवास कहते हैं।

2&vUrjjk'Vªh; i:okl–एक राष्ट्र से दूसरे देश या राष्ट्र में जाकर बसने को अन्तरराष्ट्रीय प्रवास कहते है।

वर्तमान में विश्व के लगभग 200 देशों में रह रहे भारतीय प्रवासियों की संख्या करीब 2.5 करोड़ है। फिजी, सूरीनाम व मॉरिशस, त्रिनिडाड एंव टोबेगो आदि देशों में तो शासन प्रमुख भारतीय मूल के लोग ही है या रह चुके है।

यद्यपि भारत इस समय प्रतिभा पलायन की समस्या का सामना कर रहा है परन्तु फिर भी भारत के लिये प्रवासियों का आर्थिक, राजनैतिक व सामाजिक दृष्टि से अत्याधिक महत्व है।

भारतीय प्रवास के महत्व को देखते हुए एवं उन्हें अपनी जड़ों से जोड़ने के लिये भारत सरकार भी प्रयत्नशील है इसलिये वर्ष 2003 से प्रतिवर्ष 09 जनवरी को ^iokl h Hkkjrh; fnol** मनाया जाता है।

vk/kfud Hkkjrh; lekt d lnHk e iokl d idkj&

1–अन्तरराज्यीय प्रवास

2–स्थानीय प्रवास

3–ग्रामीण–ग्रामीण प्रवास

4–ग्रामीण–नगरीय प्रवास

5–नगरीय – नगरीय प्रवास

6–नगरीय–ग्रामीण प्रवास

lEcfU/kr lkfgR; dk v/;;u–

1–**v tu iVy**– सन् 1988 ने गुजरात के प्रवासी श्रमिकों की स्थिति का वर्णन किया है कि प्रवासी मजदूरों को वहां बहुत कम मजदूरी मिलती है साथ में प्रोन्नति का भी कोई अवसर नही होता है और अपने अध्ययन में पाया है कि प्रवासी मजदूरों की स्थिति बहुत बुरी है, ना ही उनके कार्य के घण्टे निश्चित हैं व अन्य कई प्रकार की सुविधाओं से वंचित भी है।

2–**d0, l0fl)**– सन् 1989 में अपना अध्ययन पंजाब के चार जिलों में किया है जिसमें ज्यादातर प्रवासी बिहार व उत्तर प्रदेश के है और सबसे कम संख्या नेपाल के प्रवासियों की है। प्रवास का मुख्य कारण बेरोजगारी, गरीबी और कम मजदूरी है व ज्यादातर अनपढ़ है तथा चालीस वर्ष की आयु से कम है विस्तृत परिवार के सदस्य है। वहाँ के स्थानीय लोगों का मानना है कि प्रवास ज्यादा हो जाने के कारण स्थानीय लोगों की आर्थिक व कार्य करने की दशायें खराब हुई है।

3–**,e0, l0xkj**– सन् 1970 में विश्लेषित किया है वे हिन्दी भाषाई जो मुम्बई प्रवासी श्रमिक के रूप में कार्यरत है उनको काफी मात्रा में सहायता अपने दोस्तों व रिश्तेदारों से मिलती है। ये प्रवास की प्रक्रिया परिवार व गांव के आधार पर है।

4–**y{e.k jko**– सन् 1973 ने अपने अध्ययन में बताया है कि प्रवासी श्रमिक भी संघ बनाकर रहते हैं। जहां पर वे कार्य करते है उनको नये सामाजिक व्यवसायिक वातावरण का सामना करना पड़ता है, तथा साथ में जहां नये दोस्त व पड़ोसी मिलते है उनको नये अज्ञात व विचित्र व्यवसाय में जाना पड़ता है। दोस्त व रिश्तेदार उनकी मदद करते है, रहने में नौकरी ढूढ़ने में, इसी तरह से वे अपने दोस्त व व्यवसाय के आधार पर मजदूर संघ में भी शामिल होते हैं।

5–**ethr flg**– ने सन् 1995 के अध्ययन में बताया है कि प्रवास का मुख्य कारण कृषि में असमानता है। मुख्य प्रवासी बिहार व उत्तर प्रदेश राज्य के है उन्होंने दावा किया है कि अगर

लोगों का पलायन कम करना है तो कम विकसित को अपेक्षाकष्त अधिक विकसित करना होगा। जब तक विकास नही होगा व रोजगार नही होगा तो लोगों को कार्य की तलाश में पलायन मजदूर होकर करना पड़ेगा।

6–**uhyk e[kth**– सन् 2001 ने अपने अध्ययन में विश्लेषित किया है कि प्रवास का प्रमुख कारण गरीबी है। गरीबी का सामना करती हुई भूमिहीन महिलायें जो कि पश्चिम बंगाल से दिल्ली में रोजगार के लिये मजबूरी में विस्थापित होकर घरेलू जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये आई है, इन महिलाओं की महत्वपूर्ण समस्या छोटी आय होने पर अधिक धन यात्रा पर ही व्यय हो जाता है और बताया है कि पश्चिम बंगाल में सामाजिक आर्थिक विकास की प्रक्रिया का प्रभाव कम पड़ा हैं जिसके कारण बढ़ती हुई श्रम–शक्ति व भूमिहीन मजदूरों की संख्या विस्थापित करने को टिकाऊ अजीविका के अवसरों के लिये मजबूर करती हैं।

7–**fi;k nf'kxdkV ,o Mh LVkV**– सन् 2003 के अपने अध्ययन में बताया है कि लाखो गरीब मजदूरों को विस्थापित करने में मौसम भी एक कारण है। इस प्रकार उन्हें बचाने में भारतीय नीतियां अपर्याप्त है। सरकार की ओर से कल्याणकारी योजनाएं शुरू की गयी लेकिन वे भी पूरी मजदूरी दिलवाने व अन्य सुविधायें दिलवाने में असफल रही। सबसे ज्यादा बच्चे व महिलाएं बुनियादी सुविधाओं की कमी से प्रभावित है। संचयी रणनीतियों ने स्वयं को सक्षम बनाने के लिये पर्याप्त कृषि में निवेश और बच्चों की शिक्षा प्राप्त कराने में सहायता की है। इसमें अधिक संख्या में गन्ना कटर, पृथ्वी कर्मचारी और कृषि मजदूर जो कि अधिक संख्या में मध्य प्रदेश व आन्ध्र प्रदेश के है।

8–**uhVk**– 2004 ने अपने अध्ययन में विश्लेषित किया है कि प्रवास में महिलाओं की भी प्रमुख भूमिका है। वे अपने परिवार के अस्तित्व के लिये घरेलू श्रमिकों के रूप में तमिलनाडु से दिल्ली में कार्य की तलाश में आयी है और इन लोगों के मध्य आपसी व्यापक सामाजिक नेटवर्क है। ये महिलाएं तमिलनाडु के विरूधु नगर, तिरूनेलपल्ली, तिरूवन्नमलई जिलों से आयी है।

9–**,0fdu0fepkby**– ने 2009 में अपने अध्ययन में विश्लेषित किया है कि नियोक्ता, ट्रेड यूनियन और नेता व सरकार मैक्सिकन प्रवासियों के साथ भेदभाव करते है जिसे नकारात्मक परिणाम के रूप में विश्लेषित किया है।

'kks/k fof/k– यह शोध वर्णनात्मक एवं व्याख्यात्मक शोध अभिकल्प पर निर्भर है इस शोध में तथ्यों का संकलन द्वितीयक स्त्रोतों से किया गया है तथ्यों के स्त्रोत–पत्रिकाएं, जनसंख्या, जनसंख्या गजट एवं अभिलेख तथा विभिन्न प्रकार के महत्वपूर्ण समाचार पत्र, पुस्तकें व आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी इण्टरनेट आदि हैं जिस वेबसाइट से लिया गया है उसमें प्रमुख शोधगंगा आदि है। संकलित तथ्यों को सारिणी के माध्यम से दर्शाया गया है तथा तथ्यों को समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित किया गया है।

ladfyr rF;ksa dk fo"ys'k.k&

lkj.kh&1

lclsa vf/kd izokl okys jkT;&

1—	महाराष्ट्र	5.73 करोड़
2—	उत्तर प्रदेश	5.91 करोड़
3—	पश्चिम बंगाल	3.33 करोड़
4—	आन्ध्र प्रदेश	3.32 करोड़
5—	तमिलनाडु	3.13 करोड़

प्रस्तुत ऑकड़ों द्वारा स्पष्ट है कि सबसे अधिक प्रवास उत्तर प्रदेश में हुआ क्योंकि यहां पर विभिन्न प्रकार के उद्योग एवं व्यवसाय है जिससे लोगों का पलायन इस तरफ अधिक है तथा जनसंख्या की दषष्टि से भी यह राज्य सबसे बड़ा है। फिर महाराष्ट्र द्वितीय स्थान पर है और पश्चिम बंगाल व आन्ध्र प्रदेश में प्रवास के ऑकड़े लगभग समान है तथा इस सारणी में प्रस्तुत राज्यों में से सबसे कम प्रवास तमिलनाडु में हैं।

lkj.kh&2

izokl ds dkj.k & ¼2001&2011½

dkj.k	**iq:'k**	**efgyk,a**	**;ksx**
कार्य	3.90 करोड़	0.74 करोड़	4.64 करोड़
व्यवसाय	0.32 करोड़	0.11 करोड़	0.43 करोड़
शिक्षा	0.48 करोड़	0.32 करोड़	0.80 करोड़
विवाह	0.60 करोड़	21.79 करोड़	22.39 करोड़
गष्हस्थी सहित प्रवास	3.15 करोड़	3.83 करोड़	6.98 करोड़
जन्म स्थान को प्रवास	2.85 करोड़	1.94 करोड़	4.79 करोड़
अन्य	2.80 करोड़	2.53 करोड़	5.33 करोड़
;ksx	**14-10 djksM+**	**31-26 djksM+**	**45-36 djksM+**

प्रस्तुत सारणी में प्रवासियों के प्रवास के कारणों के 2001 से 2011 तक ऑकड़े वर्णित है। इस सारणी में यह स्पष्ट होता है कि पुरूषों का प्रवास कार्य के कारण अधिक है, महिलाओं का प्रवास विवाह के कारण अधिक होता है। ऑकड़ों द्वारा स्पष्ट है कि पुरूष वर्ग व्यवसाय, शिक्षा व विवाह के कारण प्रवास कम करते है। गष्हस्थी सहित प्रवास में पुरूष व महिलाओं के ऑकड़ों में बहुत ज्यादा भिन्नता नही है। जन्म स्थान को प्रवास पुरूषों में ज्यादा होता है महिलाओं की अपेक्षा, क्योंकि पितृसत्तात्मक समाज के कारण पुरूष अपने जन्म के स्थान पर प्रवास कर जाते हैं, महिलाओं में यह स्थिति नही पाई जाती है।

fu'd'k ,o l>ko–

प्रस्तुत शोध में उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्रवासियों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है क्योंकि पहले के लोगों का अपनी भूमि एवं स्वजन सम्बन्धियों से विशेष लगाव होने के कारण वे अपना मूल स्थान नही त्यागना चाहते थे, चाहे कितनी भी विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़े परन्तु अब उच्च एवं तकनीकी शिक्षा का स्तर व व्यवसायिक अवसर बढ़ने से लोगों की मानसिकता में परिवर्तन हो रहा है, अब लोग धन, सम्पत्ति व पद प्रतिष्ठा प्रस्थिति को अधिक प्राथमिकता देते है। मूल स्थान व पुराने सम्बन्धों को बनाये रखते हुये प्रवास को भी पूर्ण महत्व दे रहें हैं।

अतः निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि विभिन्न प्रकार के आधुनिक सुख–सुविधाओं, संसाधनों, शिक्षा के स्तर एवं विकास के साधनों को स्थापित किया जाये ताकि प्रवास कम हो जिससे उनकी अपनी मूल पहचान बनी रही तथा जहां जन्म लिये वहीं उन्नति कर सके जिससे वे आर्थिक बचत के साथ अपने मूल स्थान में अत्याधिक आत्मीयता के साथ कार्य करेगें और विश्वसनीयता मिलेगी तथा भौगोलिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक लक्षणों की पहचान होगी जिससे प्रवास की प्रवषत्ति कम होगी, जो कि वर्तमान सरकार ने अपने मूल एजेण्डे में रखा है इसका उदाहरण वर्तमान i/kkue=h ekn h th d Hkk'k.k l Li'V g कि यदि स्थानीय स्तर पर विकास होगा, रोजगार के अवसर व अन्य सुविधायें प्राप्त होगी तो प्रवास कम होगा तथा सामाजिक गुणों का महत्व बढ़ेगा जिससे स्थानीय स्तर पर उस एक समाज के संदर्भ में त्याग, अनुशासन, सम्मान, नैतिकता, धर्म एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी हस्तान्तरित होती रहेगी जो कि सामाजिक नियन्त्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है एवं भारतीय सांस्कषतिक गुणों का संरक्षण भी होता रहेगा।

l nHk xUFk l ph

1– *अखिलेश्वर – ''आधुनिक भारतीय समाज में बदलाव की चुनौतियां'', नई दिल्ली, 1997*

2– *जोशी0एस0सी0, ''सोशियोलॉजी ऑफ माइग्रेशन एण्ड किनशिप'' अनमोल पब्लिकेशन्स प्रा0लि0 नई दिल्ली, 1999*

3– *नीटा, ''मेकिंग ऑफ फीमेल ब्रिडविनरसः– माइग्रेशन एण्ड स्पेशल नेटवर्किंग ऑफ डोमेस्टिक वूमेन इन दिल्ली, इकोनामिक्स एण्ड पालिटिकल वीकली, अप्रैल 29–30, 2004*

4– *पायेन, ई0 ईलिएट एवं पोलिस0 जे0पी0 इ डी एस. ''ग्लोबल माइग्रेशन सोशल चेन्ज एण्ड कल्चरल ट्रान्सफारमेशन'' ई बुक, 2007, आई0एस0बी0एन0 978–0–230–60872*

5– *स्टार्ट0 डी0 एवं प्रियां देशिंगकाट ''सीजनल माइग्रेशन फॅार लिवलीहुड्स इन इण्डिया, कॉपी असिम्यूलेशन एण्ड एक्सल्यूशन'', लंदन 2003*

6– *website : www.shodhganga.inflebnet.ac.in*